बहुत ही सहज है राजयोग...

हर व्यक्ति की कामना है कि वो सबसे मिल-जुलकर रहे, खुश रहे, शांतिपूर्वक रहे, लेकिन वो शांति, वो पवित्रता आज ढूंढ़ने से भी नहीं मिल रही है। शायद कहीं कोई ऐसा बिन्दू छूट रहा है जिसे शायद हम समझ नहीं पा रहे हैं, जैसे ही वो बिन्दू हमारी पकड़ में आ जाए तो उपरोक्त सारी बातों का उत्तर हमें मिल जाएगा। कामना की पूर्ति हो जाए। चौथे अंक में आपने समझा कि जब हमें ज्ञान मिल जाये तो उससे हमारे अंदर पवित्रता आ जाती है, और पवित्रता आने के आधार से ही शांति व सुख दोनों की प्राप्ति होनी शुरु हो जाती है। अब जब ये चारो हमारे अंदर आते हैं तो क्या होता है, हम इसकी चर्चा करेंगे।

गतांक से आगे...

प्रेम

संसार में हर एक व्यक्ति प्रेम चाहता है, लेकिन हर कोई व्यक्ति आज निःस्वार्थ प्रेम देने में सक्षम नहीं है। सभी का प्रेम स्वार्थ वाला होता है। कई लोग इसे अलग भाव से भी लेते हैं कि नहीं माँ का प्रेम निःस्वार्थ होता है। यहां यह बात हम स्पष्ट करना चाहेंगे कि माँ अपने बच्चे से प्रेम नहीं करती है बल्कि मोह रखती है। अब हम आपको प्रेम और मोह में अंतर बताना चाहते हैं। मोह हमारा शारीरिक होता है, दैहिक होता है, जो अज्ञानता के कारण है। जबकि प्रेम आत्मिक होता है। उदाहरण के लिए कोई भी नर्स अपने बच्चे को इंजेक्शन नहीं लगा सकती और जब लगाती भी है तो हाथ कांपने लग जाते हैं क्योकि उसका उसके साथ मोह है। मोह के कारण हमारी कार्य करने की क्षमता घट जाती है, हमारी सहनशीलता घट जाती है। उसका दूसरा स्वरूप कोई भी डॉक्टर दूसरे बच्चे का ऑपरेशन तुरंत कर सकता है लेकिन अपने बच्चे का ऑपरेशन नहीं कर सकता। जब हमें यह आत्मज्ञान हो जाता है कि मेरा बेटा, मेरी बेटी या मेरा घर, मेरा परिवार ये सब मेरे से अलग हैं और जो भी हमारे रिश्ते हैं,

सबसे पहले तो वे आत्मा हैं और एक शरीर लेकर हमारे घर में संबंध निभाने के लिए आए हैं। इसलिए मैं इस ज्ञान के कारण उनसे आत्मा के रूप में जुड़ जाऊंगी, फिर हमारा दैहिक प्यार या मोह प्रेम में बदल जायेगा। निःस्वार्थ प्रेम आध्यात्मिक समझ और पवित्रता के आधार से ही मिलता है। जहां भावनाओं में, विचारों में, व्यवहार में अहंकार व स्वार्थ है, अशुद्धि है वहां संबंधों में प्रेम पनप नहीं सकता। आत्मा वैसे तो अपने आप में ही प्रेम स्वरूप है, प्रेम उसका निजी गुण है लेकिन आज वो उसको भूल चुकी है तो वो उसे संबंधों में तलाशती है और आज संबंध चूंकि देह, वस्तुओं एवं प्राप्तियों के आधार से है इसलिए प्रेम का स्वरूप बदल गया है। आज हर कोई न खुद जी रहा है न दूसरे को जीने दे रहा है। उदाहरण के लिए जैसे आपके पास बाईक है, कार है, मोबाइल फोन है, लैपटॉप है, तो आज आप मोबाइल फोन हैं, वो कैसे, क्योंकि उसे सिर्फ आप यूज़ करना चाहते हैं, पकड़ के रखना चाहते हैं, छोड़ना नहीं चाहते। उसी प्रकार गाड़ी को डेंट लगती और आप शोर मचाते, गाड़ी तो खड़ी है, इसका मतलब आप गाड़ी हैं। आपका तो कोई अस्तित्व ही नहीं है ना! आप या तो गाड़ी हैं, या घर हैं, परिवार हैं, बच्चे हैं या रिश्तेदार। वो तब तक नहीं होगा जब तक हम अपने आपको अलग नहीं समझेंगे। तभी हम एक-दूसरे को सच्चा प्रेम और स्नेह दे सकते हैं। - क्रमशः

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-5

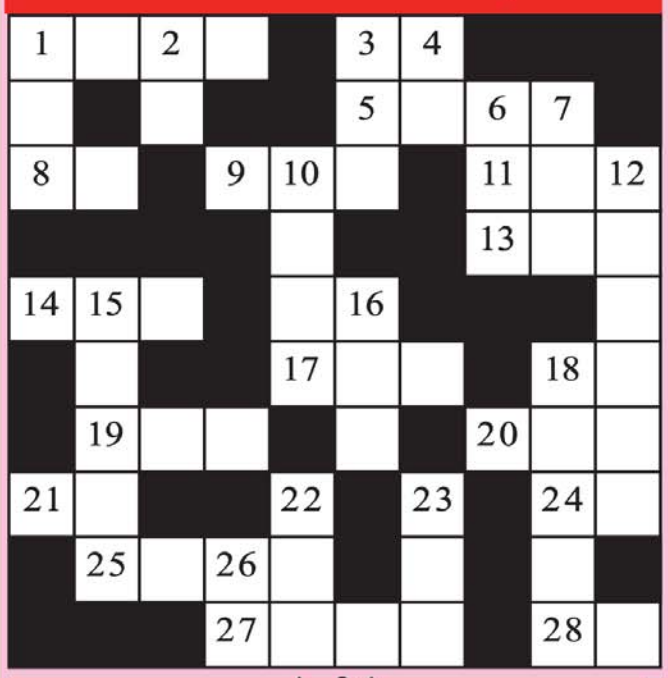

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. नाश,समाप्त, नष्ट (3)
2. राजस्व अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान..., हवन (2)
3. शिक्षा, पाठ, समझानी, सीख (3)
4. कांच का डिब्बा, रूस के प्राचीन बादशाहों की उपाधि (2)
6. हिम्मत, जज्बा (3)
7. चमड़े का मढ़ा हुआ वाद्य यन्त्र, थाप देकर बजाने वाला यन्त्र (3)
10. हम नहीं जानते, परमात्मा के बारे में सन्यासियों की मान्यता (4)
12. रौनक, हलचल, उत्सव का माहौल (3-3)
15. महा विनाश, भारत में कभी .... नहीं होती है (5)
16. सोना, स्वर्ण, धतूरा (3)
18. भगवान का एक नाम, पालना देने वाला, पालक (5)
22. किसी वस्तु का ऊपरी भाग, लेवल (3)
23. स्वस्थ, रोग रहित, तन्दुरुस्त (3)
26. काबू, अधीन, मुग्ध किया हुआ (2)

बायें से दायें

1. विदेश, दूर देश, परदेश (4)
3. दण्ड, अपने पाप कर्मों की... यहां ही भोगनी है (2)
5. जो पिया के साथ है उसके लिए... है (4)
8. आवाज़, ध्वनि, बोल (2)
9. एक से अधिक (3)
11. आराम से दो रोटी खाना है.....(लालच) नहीं रखना है (3)
13. राय, मत, विचार (3)
14. माँ का प्यार,...की मूरत मम्मा (3)
17. घास का एक टुकड़ा, डूबते को..... का सहारा (3)
18. पुण्य का विलोम, इस ..... की दुनिया से (2)
19. तरह, तरीका, विधि, रूप (3)
20. ... क्लेश मिटाओ पाप हरो देवा (3)
21. श्रीकृष्ण को तीर मारने वाला, एक आदिवासी जाति (2)
24. राम-नाम लिखकर समुद्र में पत्थर तैराने वाले वानर राज (2)
25. ज्यों का त्यों, जैसा का वैसा (4)
27. मददगार, साथी, हाथ बटाने वाला (4)
28. खुदा, भगवान, ईश्वर, अल्लाह (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

सम्बलपुर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् प्रतिष्ठित व्यवसायी माधव कुमार डालमीया व उनके परिवार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. पार्वती।

बरेली-आवला(उ.प्र.)। 'शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण' कार्यक्रम में मंचासीन हैं सांसद प्रतिनिधि नेमचन्द मोर्या, ब्र.कु. मनीषा,महा., ब्र.कु. पार्वती व सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पारुल।

अलीगढ़-हरदुआगंज। आर.ए.एफ. परिसर में 'प्रशासन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता' कार्यक्रम के दौरान डिप्युटी कमांडेंट को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिल,गुड़गांव। ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.सत्य प्रकाश व ब्र.कु.अशोक।

दिल्ली-हरिनगर। बी.एस.एफ.भोंडसी,गुड़गांव के जवानों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'स्ट्रेस मैनेजमेंट वर्कशॉप' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. नीरू।

गोला गोकर्ण नाथ-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगरपालिका चेयरमैन मिनाक्षी अग्रवाल, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

उधमपुर-अमोढ़ा मोड़। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सी.आर.पी.एस. 137 बटालियन को योगाभ्यास कराते हुए ब्र.कु. ममता व ब्र.कु. बंसीलाल।